CBSE Test Paper 03
Ch-4 मानवीय करुणा की दिव्य चमक

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**
   फादर को ज़हरबाद से नहीं मरना चाहिए था। जिसकी रगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नहीं था उसके 'लिए इस ज़हर का विधान क्यों हो? यह सवाल किस ईश्वर से पूछे? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था, वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दे? एक लम्बी, पादरी के सफेद चोगे से ढकी आकृति सामने हैं-गोरा रंग, सफेद झाँई मारती भूरी दाढ़ी, नीली आँखें-बाँहें खोल गले लगाने को आतुर । इतनी ममता, इतना अपनत्व इस साधु में अपने हर एक प्रियजन के लिए उमड़ता रहता था। मैं पैंतीस साल से इसका साक्षी था। तब भी जब वह इलाहाबाद में थे और तब भी जब वह दिल्ली आते थे। आज उन बाँहों का दबाव मैं अपनी छाती पर महसूस करता हूँ।

   i. गद्यांश में वर्णित साधु के रंग-रूप और व्यक्तित्व को अपने शब्दों में दो वाक्यों में लिखिये।
   ii. ज़हरबाद' रोग क्या होता है और गद्यांश में किस महापुरुष की जहरबाद से मृत्यु का उल्लेख हैं? वे किस रूप में प्रसिद्ध थे ?
   iii. 'बाँहों का दबाव महसूस करने का अर्थ स्पष्ट कीजिये तथा बताइये कि लेखक किनकी बाँहों के दवाब का उल्लेख कर रहा है?

2. फादर कामिल बुल्के के बचपन में उनकी माँ ने उनके विषय में क्या भविष्यवाणी की थी ? वह सत्य सिद्ध कैसे हुई ? 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ के आधार पर लिखिए।

3. लेखक ने फ़ादर के प्रभाव को दर्शाने के लिए किन-किन उपमानों का प्रयोग किया हैं? 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ के आधार पर लिखिए।

4. 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ के आधार पर फादर कामिल बुल्के की जो छवि उभरती है उसे अपने शब्दों में लिखिये।

5. 'परिमल' की गोष्ठियों में फादर की क्या स्थिति थी ? लेखक तथा अन्य प्रतिभागियों के साथ उनके संबंध कैसे थे ?

6. फ़ादर बुल्के ने भारत में रहते हुए जो कार्य किए उन्हें लिखिए।

CBSE Test Paper 03

Ch-4 मानवीय करुणा की दिव्य चमक

Answer

1. i. फादर बुल्के सफेद चोगा पहने गोरे रंग, सफ़ेद झाइ मारती भूरी दाढ़ी और नीली आँखों वाले ममता और अपनत्व से भरे हुए थे | बाहें खोले वे सबको गले लगाने को आतुर रहते थे।
   ii. जहरबाद एक प्रकार का विषैला फोड़ा होता है जिसे अंग्रेजी में गैंग्रीन कहते हैं | इस गद्यांश में महान फादर कामिल बुल्के की ज़हरबाद से मृत्यु का उल्लेख है | वे एक महान हिंदी लेखक, आलोचक और कोशकार के रूप में प्रसिद्ध थे |
   iii. 'बाँहों का दबाव महसूस करने' का अर्थ है 'आलिंगनपूर्ण स्नेह की याद करना' | लेखक फादर कामिल बुल्के की बाँहों के दबाव का उल्लेख कर रहा है जो उनके लिए अग्रज तथा अभिभावक के समान थे।
2. फादर कामिल बुल्के के बचपन में उनकी माँ ने भविष्यवाणी की थी कि 'लड़का हाथ से गया' | वह सत्य इस प्रकार सिद्ध हुई कि जब फादर इंजीनियरिंग के अन्तिम वर्ष में थे तब उन्होंने पढ़ाई छोड़कर संन्यासी बनकर भारत आने का निर्णय लिया |
3. लेखक ने फ़ादर के प्रभावशाली व्यक्तित्व को दर्शाने के लिए निम्नलिखित उपमानों का प्रयोग किया है-
   i. उदास शांत संगीत सुनने जैसा |
   ii. करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा |
   iii. देवदारु के पेड़ की छाया के सुख जैसा |

4. फादर कामिल बुल्के का रंग गोरा था। सफेद झाँई मारती भूरी दाढ़ी, वात्सल्य और ममत्व से परिपूर्ण नीली आँखें थी। बाँहें सदा दूसरों को गले लगाने को आतुर रहती थीं।अपने प्रियजनों के प्रति इतनी आत्मीयता रखते कि अपने आशीर्वादों से लोगो के मन को लबालब भर देते थे। दुख की घड़ी में भी अपने प्रियजनों को ऐसे सांत्वना देते थे कि वो अपना सारा दुख भूल जाता था।

5. परिमल में सभी सदस्य एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे थे जिसके बड़े फादर बुल्के थे। विनोद, हास-परिहास के साथ वे साहित्यिक गोष्ठियों में बेबाक राय देते तथा सभी परिवारों के संस्कारों में बड़े भाई और पुरोहित की भाँति खड़े रहकर सबको अपने आशीर्वाद से भर देते।
6. फादर बुल्के भारत में आकर सबसे पहले 'जिसेट संघ' में दो साल पादरियों के बीच धर्माचार् की पढ़ाई की। कोलकाता से बी. ए किया और इलाहाबाद से एम. ए .। प्रयाग विश्व विद्यालय के हिंदी विभाग में रह कर 1950 में 'राम कथा: उत्पत्ति और विकास' पर शोध प्रबंध पूरा किया, फिर मातरलिंक के प्रसिद्ध नाटक 'ब्लू बर्ड' का हिंदी रूपांतर 'नील पंछी' के नाम से किया। 'परिमल 'जैसी साहित्यिक संस्था की सदस्यता भी बखूबी निभाई। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बाद में सेंट जेवियरस कॉलेज रांची में हिंदी तथा संस्कृत के विभागाध्यक्ष हो गए। यहीं इन्होंने प्रसिद्ध अंग्रेजी-हिंदी कोश तैयार किया और बाइबिल का भी अनुवाद किया। इस प्रकार भारत में रहते हुए फादर कामिल बुल्के ने अनेक प्रशंसनीय कार्य किए।